

## न्याय जिसका सामना मनुष्य करेंगे

फ्रैंकलीन के अध्ययन नोट्स

आकाश और पृथ्वी का रचने वाला सर्वशक्तिमान परमेश्वर अपनी समस्त सृष्टि का प्रभु है, जिसे न्याय करने की सम्पूर्ण प्रभुता प्राप्त है। और केवल परमेश्वर ही धर्मी और न्यायी है। (भजन संहिता 7:11; 2 तीमुथियुस 4:8)

**आदम और हवा का उनकी अवज्ञाकारिता के लिए सर्प के साथ न्याय हुआ** (उत्पत्ति 3:13-19)

**जलप्रलय के समय समस्त मानवजाति का न्याय हुआ।**

उत्पत्ति 6:5 - यहोवा ने देखा कि **मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है**, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता | (13) तब परमेश्वर ने नूह से कहा, “सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है ; क्योंकि पृथ्वी उनके कारण उपद्रव से भर गई है, इसलिए मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा |

**सदोम और अमोरा का न्याय उनकी अनैतिकता के लिए हुआ**

उत्पत्ति 19:24-25 तब यहोवा ने अपनी ओर से सदोम और अमोरा पर आकाश से **गन्धक और आग बरसाई**, (25) और उन नगरों को और उस सम्पूर्ण तराई को, और नगरों के सब निवासियों को, भूमि की सारी उपज समेत नष्ट कर दिया।

और जिस प्रकार 1 कुरिन्थियों 10:11 में लिखा है: परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, **दृष्टान्त** की रीति पर थी ; और वे **हमारी चेतावनी** के लिए जो जगत के अंतिम समय में रहते हैं लिखी गई है।

इबानियो 10:30-31 - क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, “पलटा लेना मेरा काम है, **मैं ही बदला दूँगा।**” और फिर यह, कि “**प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।**” (31) जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

अतः परमेश्वर के प्रति अपने **प्रेम** के साथ-साथ यह **आवश्यक** है और ऐसा **होना चाहिए**, कि हमारे पिता सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का **भक्तिपूर्ण भय** हमारे जीवन के रहन-सहन को जाँचे तथा उसका मार्गदर्शन करे। (पृष्ठ संख्या 15 देखें)

परमेश्वर के **भक्तिपूर्ण भय** को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम नए नियम में प्रकाशित “**न्यायों**” को स्पष्ट रीति से समझें।

नए नियम में पांच भिन्न न्याय प्रकट किए गए हैं और इसे प्राप्त करने वाले, इसका स्थान, और उद्देश्य अलग-अलग हैं। फिर भी, उनमें एक बात समान्य है: **प्रभु यीशु मसीह न्यायी है।**

यूहन्ना 5:22 - पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।

प्रेरितों के काम 17:31 - क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुआ में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।

आदम से लेकर इस पृथ्वी पर पैदा होने वाले अंतिम मनुष्य तक, हर एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह के सामने न्याय के लिए के खड़े होंगे।

## 1. विश्वासियों के पापों का न्याय

यूहन्ना 5:24 - मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; और उस पर दंड कि आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

मानव इतिहास का यह सबसे बड़ा समाचार है

प्रथम न्याय में, विश्वासी के पापों का न्याय यीशु मसीह में क्रूस पर पहले ही किया जा चुका है। यह विश्वासी के हृदय में बहुत राहत, कृतज्ञता, प्रशंसा और धन्यवाद उत्पन्न करता है।

हमारे पापों का न्याय क्रूस पर यीशु मसीह में हुआ है और प्रत्येक विश्वासी "मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है", और कभी वापस नहीं लौटेगा। यीशु ने हमारे पापों का पूरा दण्ड चुकाया, पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है (रोमियों 6:23) परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।(रोमियों 5:8)

अतः अब जो मसीह यीशु में हैं उन पर दण्ड (κατακριμα - विरोध में न्याय करना, फैसला देना, दोषी ठहराना, आलोचना करना) की आज्ञा नहीं। क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं। (2) क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है। (3) क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल हो कर न कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पाप बलि होने के लिए भेज कर, शरीर में पाप पर दण्ड (κατεκρίνεν - उसी शब्द की क्रिया) की आज्ञा दी। रोमियों 8:1-4

जो पाप से अज्ञात था उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। 2 कुरिन्थियों 5:21

इस प्रकार हमें पाप और मृत्यु से स्वतन्त्र किया

- हमारे लिए यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा समस्त पापों का दण्ड चुका दिया। इसलिए विश्वासी जन अपने पापों से सदा के लिए अलग कर दिया गया है।  
उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया।  
भजन संहिता 103:12
- विश्वासी के पापों को “धो दिया गया” है और परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे पापों को “स्मरण भी नहीं करेगा”। मैं वही हूँ जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूँ और तेरे पापों को स्मरण न करूँगा। यशायाह 43:25
- हमारे परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए दुःख उठाया, अर्थात् “अधर्मियों के लिए धर्मी ने दुःख सहा”, ताकि हम बचाए जा सकें और पापियों के समान कभी दण्ड न पाएं। इसलिए मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमे परमेश्वर के पास पहुंचाए: वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया।  
1 पतरस 3:18
- क्रूस पर यीशु हमारे लिए श्रापित बना और “हमें मोल लेकर व्यवस्था के साप से छुड़ाया”। मसीह ने स्वयं श्रापित बनकर हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया है। गलातियों 3:13
- यीशु इस संसार में प्रगट हुए ताकि वह अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दें। पर अब युग के अन्त मैं वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। इब्रानियों 9:26
- विश्वासियों को न्याय-दण्ड नहीं दिया जाएगा क्योंकि उनके पाप धोए गए हैं या वे शुद्ध किए गए हैं। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दहिने जा बैठा। इब्रानियों 1:3

## II. विश्वासी का अपने आप को जाँचना

1 कुरिन्थियों 11:31-32 यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

ताड़ना का विचार हमेशा कुछ भय को ले कर आता है जिससे हम अपने चाल-चलन पर ध्यान दें। परमेश्वर की सन्तान होने के नाते हम अपने जीवन में अपने पिता की ताड़ना को कम कर सकते हैं यदि हम जल्द और निरंतर अपने आपको जांचते रहे।

1 पतरस 4:17 - क्योंकि वह समय आ पहुंचा है, कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए, और जबकि न्याय का आरम्भ हम ही से होगा तो उन का क्या अनंत होगा जो परमेश्वर

## के सुसमाचार को \*नही मानते?

\*यूनानी शब्द का अर्थ “जान-बूझ कर और इच्छापूर्वक, अविश्वास करना।”

अपने जीवन की बातों से अधिक विश्वासी का **अपने आप** को जाँचना है। जब हम अपने आप को जाँचते हैं तो हमारे जीवन में जो अच्छा और बुरा होता है, वह सब सामने आ जाता है; और फिर हम **बुरी बातों को मान कर उसे छोड़ देते हैं।**

1 यूहन्ना 1:9 - यदि हम अपने पापों **मान** लें, तो वह हमारे पापों को **क्षमा करने**, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है ।

यशायाह 55:7 - दुष्ट अपनी **चालचलन** और अनर्थकारी अपने **सोच विचार छोड़कर** यही कि ओर फिरे, वह उस पर **दया करेगा**, वह हमारे परमेश्वर की ओर **फिरे** और वह **पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा।**

- अपने आपको जांचने का अर्थ यह जानना है, “कि मुझ में अर्थात् **मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती।** रोमियों 7:18
- अपने आपको जांचने का अर्थ यह समझना है कि मैंने अपने स्वयं को पहले रखा और यीशु मसीह के पीछे चलने और अपना क्रूस उठाने के द्वारा **मेरा स्वयं मर जाना चाहिए।** उसने सब से कहा, “यदि **कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार** करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। लूका 9:23
- अपने आपको जांचने का अर्थ **अपने जीवन को**, मसीह के जीवन के साथ बदल देना। मसीह ही विश्वासी का जीवन है।  
गलतियों 2:20 **मसीह मुझ में जीवित है;**  
कुलुस्सियों 3:4 **जब मसीह जो हमारा जीवन है**
- अपने आप को जांचने का अर्थ यह है कि अब आप **आत्म-चेतन** में नहीं रहे बल्कि उसकी उपस्थिति को जानते हुए आप ख्रीष्ट-चेतित बन गए हैं।  
मती 28:20 **और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ**  
इब्रानियों 13:5 **मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।**
- अपने आप को जांचने का अर्थ यह है कि अब आप **आत्म-नियंत्रित** नहीं बल्कि मसीह नियंत्रित बन गए हैं। लूका 6:46 **जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो?**
- अपने आप को जांचने का अर्थ यह है कि अब आप **स्वयं को पहले** नहीं रखते बल्कि **दूसरों को अपने से बेहतर** समझते हैं। फिलिपियों 2:3 **विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो**, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से **अच्छा समझो।**
- हम अपने आप को जाँचे न कि दूसरों को ।

यूहन्ना 8:7 जब वे उससे पूछते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे।"

मती 7:1-5 **दोष मत लगाओ फक तुम पर भी दोष न लगाया जाए।** (2) क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।" (3) "तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्टा तुझे नहीं सूझता?" (4) "जब तेरी ही आँख में लट्टा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला में तेरी आँख से तिनका निकल दूँ?'" (5) "हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लट्टा निकल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।

रोमियों 14:4 **तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है?** उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है; वरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा, क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है।"....(10) तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

### III. विश्वासी के कार्यों का न्याय

2 कुरिन्थियों 5:10 **क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।**

विश्वासी के कार्य - जो कुछ भी हमने किए हैं - उनका न्याय, "मसीह के न्याय आसन" पर होगा। शब्द "मसीह का न्याय आसन", हम बाइबल में केवल दो ही बार पाते हैं परन्तु इसका उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है।

संदर्भ को ध्यान पूर्वक देखने से ज्ञात होता है कि केवल विश्वासी "मसीह के न्याय आसन" के सामने प्रकट होंगे। हमारे पापों का नहीं, परन्तु हमारे कार्यों का न्याय होगा, क्योंकि हम पहले ही देख चुके हैं कि विश्वासी के पापों का न्याय, मसीह में क्रूस पर हो चुका है, और "अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड (उनके विरुद्ध न्याय, सजा) की आज्ञा नहीं।" रोमियों 8:1

यह न्याय कब होगा, स्पष्ट नहीं है। यह तब हो सकता है, जब हम इस दुनिया को देह की मृत्यु के कारण छोड़ जाते हैं, या फिर कलीसिया के उठाये जाने पर (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)

- "मसीह के न्याय आसन" पर विश्वासी अपने आप का लेखा परमेश्वर को देगा। इसलिए, हम अपने कार्यों को देखें, और दूसरों के कार्यों को नहीं जांचें।  
"रोमियों 14:10 तू अपने भाई पर **क्यों** दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? **हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे ... (12) इसलिए हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।**

1 कुरिन्थियों 4:5 इसलिए जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो : वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखलाएगा , और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

अदभुत है, न केवल हमारे कार्ये प्रगट किए जाएंगे परन्तु हमारे अभिप्राय भी, जो भी कार्य हम करते हैं उसका वास्तविक उद्देश्य प्रगट किया जाएगा। परमेश्वर का सम्बन्ध न केवल इस बात से है कि हम क्या करते हैं बल्कि यह भी कि हम क्यों करते हैं। अपने स्वार्थ या बुरे उद्देश्य के लिए किया गया “भला कार्य” मेरे लिए कोई महत्व का नहीं।

- यह जानना कि एक दिन हम अपने समस्त कार्यो का सामना करेंगे, “भले और बुरे” तथा “हर एक निकम्मी बातों का लेखा देंगे”, हमारे हृदय में नियंत्रित करने वाले भय को जागृत कर देता है। और मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे।" मत्ती 12:36
- कुछ लज्जित होंगे। 1 यूहन्ना 2:28 अतः हे बालको , उसमें बने रहो ताकि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।
- कुछ हानि उठाएंगे, उद्धार की हानि नहीं, परन्तु प्रतिफल की हानि। 1 कुरिन्थियों 3:11 -15 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। (12) यदि कोई इस नींव पर सोना या चांदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, (13) तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।(14) जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।(15) यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते।
- हमें अपना जीवन किस प्रकार जीना चाहिए? तुम उन लोगों के समान वचन बोलो और काम भी करो, जिनका न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा। याकूब 2:12  
याकूब 5:9 हे भाइयो, एक दूसरे पर दोष न लगाओ, ताकि तुम दोषी न ठहरो; देखो, हाकिम द्वार पर खड़ा है।
- अतः जो कुछ भी आप करें, परमेश्वर की महिमा के लिए करें। कुलुस्सियों 3:17 वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

#### IV. दुष्टों के न्याय का बड़ा श्वेत सिंहासन

2 Thessalonians 2:8-12 तब वह अधर्मी प्रगट होगा, ..... (9) उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह और अद्भुत काम के साथ, (10) और नाश होनेवालों के लिए अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया जिससे से उनका उद्धार होता। (11) .... कि वह झूठ की प्रतीति करें, (12) ताकि जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएंगे।

यूहन्ना 12:48 जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात् जो वचन में ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।

#### प्रेरित पतरस ने अकसर इस न्याय का जिक्र किया

2 पतरस 2:4 क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप करना नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें

2:9 तो प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है

2:17 ये लोग सूखे कूएँ, और आँधी के उड़ाए हुए बादल हैं; उनके लिए अनन्त अन्धकार ठहराया गया है।

3:7 पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे गए हैं कि जलाए जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे।

3:10-15 परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएँगे।(11) जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए,(12) और परमेश्वर के उस दिन की बात किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। (13) पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। (14) इसलिए, हे प्रियों, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो, तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो

जब प्रेरित यूहन्ना पतमुस टापू पर था तो उसने इस न्याय को अपने प्रकाशन में पहले से ही देख लिया। प्रकाशितवाक्य 20:11-15

फिर मैं ने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिए जगह न मिली। (12) फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुआँ को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में

लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुए का न्याय किया गया। (13) समुद्र ने उन मरे हुए को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुए को जो उनमें थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। (14) मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है (15) और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

- इब्रानियों 9:27 और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। यदि किसी का नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाया गया तो वह दूसरी मृत्यु मरेगा। मृत्यु अलगाव है। पहली मृत्यु देह से अलग होना है। दूसरी मृत्यु उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर से अलग होना है। वह जिसका जन्म एक बार हुआ, दो बार मरेगा तथा वह जिसका जन्म दो बार हुआ है एक ही बार मरेगा।
- उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए। इस न्याय में, मरे हुए दुष्ट जन, न्यायी प्रभु यीशु मसीह का सामना करने से बचने के लिए छिपने का स्थान ढूँढेंगे। परन्तु छिपने का कोई स्थान न मिला।
- इस न्याय में, छोटे और बड़े, सब मरे हुए को परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होना है। परन्तु बड़े की महानता का कोई मूल्य नहीं होगा। जिन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास किया और उसे ग्रहण किया है, वे मरे नहीं हैं।

इफिसियों 2:1-5 उसने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे" (2) "जिनमें तुम पहले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। (3) इनमें ("इनमें से" नहीं) हम भी सब के सब पहले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर और मन की इच्छाएं पूरी करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से (आदम से जन्में) क्रोध की सन्तान थे। (4) परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उसने हम से प्रेम किया," (5) जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।"



- इस न्याय में मरे हुआँ का न्याय जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार किया गया और इस बात के अनुसार कि जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, किया गया।
  - ध्यान दें, कि विश्वासियों के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे गए: प्रकाशितवाक्य 13:8 पृथ्वी के वे सब रहनेवाले, जिनके नाम उस मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

लूका 10:20 "तौभी इससे आनन्दित मत हो कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।"

इफिसियों 1:4 जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।
- इस न्याय में, कोई छुटकारा नहीं होगा, न ही कोई और उच्चतर न्यायालय जहाँ हारे हुए मुकद्दमे की फिर से अपील कर सके। वे जो खो गए तो सदा के लिए खो गए; अनन्तता में, बिना किसी आशा और हमदर्दी के।

मत्ती 13:37-43 उसने उनको उत्तर दिया, "अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। (38) खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य की सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट की सन्तान हैं। (दो बहुत ही अलग किस्म के लोग) (39) जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है, और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। (40) अतः जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसे ही जगत के अन्त में होगा। (41) मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे, (42) और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। (43) उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। (दानियेल 12:3) जिसके कान हों वह सुन ले।

मसीह के हजार वर्ष के राज के बाद बड़े श्वेत सिंहासन का न्याय होगा। प्रकाशितवाक्य 20:5 के अनुसार इस न्याय के हजार वर्ष पूर्व विश्वासियों का पुनरुत्थान हुआ था।

प्रकाशितवाक्य 20:4-6 फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया। (देखें मत्ती 19:27-30) मैं ने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। (5) जब तक यह हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो पहला पुनरुत्थान है। (जो जीवित हुए और जिन्होंने मसीह के साथ राज किया) (6) धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।

- जब हम पढ़ते हैं “वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे”, इसका यह अर्थ नहीं कि उस समय सभी विश्वासी मृत होंगे। स्मरण करें, पौलुस ने कहा: जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं (फिलिप्पियों 1:23) और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना (2 कुरिन्थियों 5:8)। वह जानता था कि मृत्यु के समय उसकी आत्मा उसकी देह से निकल जाएगी और परमेश्वर की उपस्थिति में रहेगी। इस वक्तव्य “वे जीवित होकर” का सम्बन्ध “देह के पुनरुत्थान” से है, जैसा पौलुस ने कहा, स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है। (1 कुरिन्थियों 15:42-44)

## v. जातियों का न्याय

मनुष्य का हृदय अन्तर्बोध द्वारा जानता है कि न्याय होगा। राजा दाऊद ने इसके लिए प्रार्थना की: भजन संहिता 9:17-20 दुष्ट अधोलोक में लौट जाएंगे, तथा वे सब जातियां भी जा परमेश्वर को भूल जाती है। (19) उठ, हे परमेश्वर, मनुष्य प्रबल न होने पाए! जातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए। (20) हे परमेश्वर, उनको भय दिला! जातियां अपने को मनुष्यमात्र ही जानें।

- दाऊद की प्रार्थना की पुकार का उत्तर दिया जाएगा
- जातियां (एथनोस) वास्तव में जातीय समूह या जनजातियां हैं जिन्हें यहूदी “अन्य जाति” कहा करते थे।

मेरे विचार में, यह न्याय बड़े श्वेत सिंहासन के न्याय वाले उस महान दिन का एक और चित्रण है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसका समय भिन्न है। मुझे इस बात का निश्चित प्रमाण नहीं मिला कि यह कब होगा परन्तु इसका विवरण निश्चय ही बड़े श्वेत सिंहासन के विवरण से मेल खाता है।

स्मरण करें कि इसके सही समय के सम्बन्ध में यीशु ने क्या कहा : उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। मत्ती 24:36

मत्ती 25:31-36 जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।

दानिएल ने इस महिमित घटना को पहले ही देख लिया: दानिएल 7:9-10

मैं ने देखते देखते अन्त में क्या देखा, कि सिंहासन रखे गए, और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ; उसका वस्त्र हिम सा उजला, और सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे; उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिये धधकती हुई आग के से देख पड़ते थे। (10) उस प्राचीन के सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी; फिर हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे, और लाखों लाख लोग उसके साम्हने हाजिर थे; फिर न्यायी बैठ गए, और पुस्तकें खोली गईं।

## एक अदभुत दृश्य

सारे मनुष्यों का न्याय “मनुष्य के पुत्र” को समर्पित है क्योंकि उसने अपने आपको नम्र बनाया और नीचे झुकाया ताकि हमारे रूप ले ले। उसने पापरहित मनुष्य के रूप में धर्मी और पवित्र जीवन बिताया और इस कारण केवल वही सही और सिद्ध रीति से सभी मनुष्यों का न्याय कर सकता है।

सांसारिक राजाओं के सिंहासन बहुत ऐश्वर्य और महिमा का प्रदर्शन करते हैं। तथापि, जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, अपने सारे वैभव, प्रताप, चमक, विशालता और ऐश्वर्य के साथ, तो वह हमारी समझ से बहुत, बहुत परे होगा।

प्रभु यीशु मसीह अपने स्वर्गदूतों के साथ आएगा, उसके महिमित साथी, उसके सेवक, जो:

- उसके चुने हुएों को इकट्ठा करेंगे:

मत्ती 24:31 और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुएों को इकट्ठा करेंगे।

- और जंगली दानों को बटोरेंगे:

मत्ती 13:40 सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा।

- परमेश्वर फिर चुने हुएों के विश्वास की घोषणा करेगा और जिन्होंने उसका इनकार किया उनके अविश्वास और अस्वीकार किए जाने की भी घोषणा करेगा:

लूका 12:8-9 मैं तुम से कहता हूँ जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने मान लेगा। (9) परन्तु जो मनुष्यों के साम्हने मुझे इनकार करे उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने इनकार किया जाएगा।

- **और वह आपको आदर का स्थान देगा:**

प्रकाशितवाक्य 3:21-22 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। (22) जिस के कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।।

तो फिर ..... आप यीशु मसीह के लिए कितने विशेष हैं।

मत्ती 25:31-46 को जारी रखते हुए : जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। (32) और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। (33) और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। (34) तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। .... (41) तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। .... (46) और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

मत्ती 16:27 में भी इसका जिक्र है: **मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल (शब्दशः लौटाएगा) देगा।**

- मत्ती 25:32 वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। जिस प्रकार एक चरवाहा करता है ... यूहन्ना 10:14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ; मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।

अच्छे से अच्छा अविश्वासी भी उनके साथ जुड़ नहीं पाएगा।

भजन संहिता 1:4 दुष्ट लोग ऐसे नहीं होते, वे उस भूसी के समान होते हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है। (5) इस कारण दुष्ट लोग अदालत में स्थिर न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में ठहरेंगे; (6) क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा।।

- मलाकी ने इस दिन को आते हुए देखा: मलाकी 4:1-3 क्योंकि देखो, वह धधकते भट्टे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूटी बन जाएंगे; और उस आनेवाले दिन में वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता तक न रहेगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (2) परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों की नाई कूदोगे और फांदोगे। (3) तब तुम दुष्टों को लताड़ डालोगे, अर्थात् मेरे उस ठहराए हुए दिन में वे तुम्हारे पांवों के नीचे की राख बन जाएंगे, (रोमियों 16:20, देखें) सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

- जी हाँ, धर्मी जन बहुत आशीष पाएंगे:  
मत्ती 25:34 तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।

हमारे पिता ने हमारे लिए राज्य तैयार किया है ... और हमें राज्य के लिए तैयार किया है। इफिसियों 1:4 जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

### प्रकाशितवाक्य से समतुल्य पद

- उस दिन की गंभीरता और भक्तिहिनों के हृदयों में भय । प्रकाशितवाक्य 6:12-17 और जब उस ने छठवीं मुहर खोली, तो मैं ने देखा, कि एक बड़ा भूकम्प हुआ; और सूर्य कम्बल के समान काला, और पूरा चन्द्रमा लहू का सा हो गया। (13) और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं।(14) और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है; और हर एक पहाड़, और टापू, अपने अपने स्थान से टल गया। (15) और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतंत्र, पहाड़ों की खोहों में, और चटानों में जा छिपे। (16) और पहाड़ों, और चटानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो।(17) क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है?
- प्रकाशितवाक्य 11:17-18 यह कहने लगे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ्य काम में लाकर राज्य किया है। (18) और अन्यजातियों ने क्रोध किया, और तेरा प्रकोप आ पड़ा और वह समय आ पहुंचा है, कि मरे हुआँ का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए जाएं।

- धर्मी जन की आराधना, शान्ति और आनन्द।

प्रकाशितवाक्य 7:9-12 इस के बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, **हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा** में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहिने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए **सिंहासन** के साम्हने और मेम्ने के साम्हने खड़ी है। (10) और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय- जय- कार हो। (11) और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन और प्राचीनों और चारों प्राणियों के चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन के साम्हने मुंह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा, आमीन। (12) हमारे परमेश्वर की स्तुति, ओर महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें। आमीन। ... (14) मैं ने उस से कहा; हे स्वामी, तू ही जानता है: उस ने मुझ से कहा; ये वे हैं, **जो उस बड़े क्लेश में से निकलकर आए हैं**; इन्होंने अपने अपने वस्त्रा मेम्ने के लोहू में धोकर श्वेत किए हैं। (15) इसी कारण वे **परमेश्वर के सिंहासन** के साम्हने हैं, और उसके मन्दिर में दिन रात उस की सेवा करते हैं; और **जो सिंहासन पर बैठा है**, वह उन के ऊपर अपना तम्बू तानेगा। (16) वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे: ओर न उन पर धूप, न कोई तपन पड़ेगी। (17) क्योंकि **मेम्ना** जो **सिंहासन के बीच** में है, उन की रखवाली करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा, और **परमेश्वर उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।।**

- धर्मी जनों का एक और झुण्ड आराधना में शामिल हो जाता है। प्रकाशितवाक्य 15:2-4 और मैं ने आग से मिले हुए कांच का सा एक समुद्र देखा, और जो उस पशु पर, और उस की मूरत पर, और उसके नाम के अंक पर **जयवन्त हुए** थे, उन्हें उस कांच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा। (3) और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, कि हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े, और अद्भुत हैं, हे **युग युग के राजा**, तेरी चाल ठीक और सच्ची है। (4) हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा? और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है, और सारी जातियां आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं।।

- जब न्याय समाप्त होंगे तो हम जो उसके हैं, सारे इकट्ठा होकर मेमने के विवाह भोज में **आनन्द मनाएँगे।**

प्रकाशितवाक्य 19:1-10 इस के बाद मैं ने स्वर्ग में मानो **बड़ी भीड़** को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि हल्लिलूय्याह उद्धार, और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है। (2) क्योंकि **उसके निर्णय सच्चे और ठीक** हैं, इसलिये कि उस ने उस बड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, **न्याय किया**, और उस से अपने दासों के लोहू का पलटा लिया है। (3) फिर दूसरी बार उन्होंने ने हल्लिलूय्याह कहा: और उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा। (4) और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् किया; **जो सिंहासन पर बैठा था**, और कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह । (5) और सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि **हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले दासों**, क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब **उस की स्तुति करो।** (6) फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लिलूय्याह, इसलिये कि

प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है। (7) आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि **मेम्ने का ब्याह** आ पहुंचा: और **उस की पत्नी** ने अपने आप को तैयार कर लिया है। (8) और उस को शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया, क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। (9) और उस ने मुझ से कहा; यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो **मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं**; फिर उस ने मुझ से कहा, ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।

आभार :

क्रिश्चन लाइफ न्यू टेस्टामेंट;  
मैथ्यू हेनरी कमेंट्री

उन सभी के लिए परमेश्वर की आशीर्षे जो उसका भय मानते हैं।

- भजन संहिता 31:19-20 आहा, तेरी भलाई क्या ही बड़ी है जो तू ने **अपने डरवैयों** के लिये रख छोड़ी है, और अपने शरणागतों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट भी की है! (20) तू उन्हें दर्शन देने के गुप्तस्थान में मनुष्यों की बुरी गोष्ठी से गुप्त रखेगा; तू उनको अपने मण्डप में झगड़े- रगड़े से छिपा रखेगा।।
- भजन संहिता 33:18 देखो, यहोवा की दृष्टि **उसके डरवैयों** पर और उन पर जो उसकी करुणा की आशा रखते हैं बनी रहती है
- भजन संहिता 34:7 **यहोवा के डरवैयों** के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है।
- भजन संहिता 85:9 निश्चय **उसके डरवैयों** के उद्धार का समय निकट है, तब हमारे देश में महिमा का निवास होगा।।
- भजन संहिता 86:11 हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखा, तब मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा, मुझे को एक चित्त कर कि मैं **तेरे नाम का भय मानूँ**।

- भजन संहिता 103:11 जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करुणा **उसके डरवैयों** के ऊपर प्रबल है।
- भजन संहिता 103:13 जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा **अपने डरवैयों** पर दया करता है।
- भजन संहिता 103:17 परन्तु यहोवा की करुणा **उसके डरवैयों** पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी प्रगट होता रहता है
- भजन संहिता 111:10 बुद्धि का मूल **यहोवा का भय** है; जितने उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उनकी बुद्धि अच्छी होती है। उसकी स्तुति सदा बनी रहेगी।।
- भजन संहिता 115:11 हे **यहोवा के डरवैयो**, यहोवा पर भरोसा रखो! तुम्हारा सहायक और ढाल वही है।।
- भजन संहिता 115:13 क्या छोटे क्या बड़े **जितने यहोवा के डरवैये** हैं, वह उन्हें आशीष देगा।।
- भजन संहिता 119:63 जितने **तेरा भय मानते** और तेरे उपदेशों पर चलते हैं, उनका मैं संगी हूँ।
- भजन संहिता 119:120 **तेरे भय** से मेरा शरीर कांप उठता है, और मैं तेरे नियमों से डरता हूँ।।
- भजन संहिता 145:19 वह **अपने डरवैयों** की इच्छा पूरी करता है, ओर उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करता है।
- भजन संहिता 147:11 **यहोवा अपने डरवैयों** ही से प्रसन्न होता है, अर्थात् उन से जो उसकी करुणा की आशा लगाए रहते हैं।।